गोरक्ष कहे सुण हरे अवधू...

अध्यात्म मनुष्य के जीवन का एक अभिन्न अंग है। यह उसकी सोच, जीवन शैली और यहां तक कि समाज की दिशा भी तय करता है। यह एक निर्विवादित यथार्थ है, जिसका भारतीय संदर्भ में और भी गहरा महत्व है। इसी अध्यात्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है नाथ पंथ, जिसकी जड़ें भारतीय इतिहास में बहुत गहरी हैं। इस पंथ की विस्तृत समझ के लिए हमें इतिहास की गहराइयों में जाना होगा।

नाथ पंथ के कालखंड को लेकर विद्वानों में भिन्न-भिन्न मत हैं, फिर भी आठवीं से अठारहवीं शताब्दी तक के मध्यकाल को लेकर उनमें एकरूपता दिखती है। यह वह समय था जब भारतीय समाज अनेक जटिलताओं से घिरा हुआ था। आज की तरह ही आबादी का एक बड़ा हिस्सा गांवों में निवास करता था, और आजीविका का मुख्य साधन खेती और पशुपालन ही था। मशीनी युग का इतना विस्तार नहीं हुआ था, और बाज़ार का आधुनिक स्वरूप भी विकसित नहीं था। समाज अनेक मतों में विभक्त था, जिनमें शैव, शाक्त, बौद्ध, जैन और वैष्णव मार्गी प्रमुख थे। इस दौरान देसी राजा शासन कर रहे थे, और ऊँच-नीच का भेदभाव प्रबल था। सामाजिक सोच, समझ और प्रशासनिक व्यवस्था में बिखराव था। ऐसे में, इस बिखराव को समाप्त करने, जीवन में शुचिता और अनुशासन लाने की प्रबल आवश्यकता महसूस हुई। ज़ाहिर है, यह सब आध्यात्मिकता से ही संभव था। इसी बड़े "बिखराव" को पाटने के लिए नाथ पंथ का उदय हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का मानना है कि बौद्धों की वज्रयान शाखा ही नाथ पंथ के रूप में विकसित हुई। नाथ पंथ के आगमन के साथ ही शैव, शाक्त, बौद्ध, जैन और वैष्णव मतों के अनुयायी इस संप्रदाय में समाहित होने लगे।

यूं तो नाथ संप्रदाय का आरंभ आदिनाथ भगवान शिव से माना जाता है, इसलिए शिव को ही आदि गुरु दत्तात्रेय के साथ नाथ संप्रदाय के प्रथम उपदेशक और परम आराध्य के रूप में संदर्भित किया गया है। दत्तात्रेय के शिष्य मत्स्येंद्रनाथ हुए, और उनके शिष्य गोरक्षनाथ। यह वही गोरक्षनाथ जी हैं जिनके नाम पर आज गोरखपुर महानगर बसा हुआ है।

गुरु गोरक्षनाथ को नमन करते गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश।

धर्म और राज्य के बिखराव को रोकने का किया प्रयास

- गुरु गोरक्षनाथ ने धर्म और राज्य के बिखराव को रोकने का प्रयास किया और इसे एक सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया। इस पंथ के साधक हठयोग पर विशेष बल देते हैं, इसलिए इन्हें योग मार्गी भी कहा जाता है। गुरु गोरक्षनाथ ने योग अंग क्रिया (योग, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान) को महत्व दिया और इसके माध्यम से हठयोग का उपदेश दिया। उनकी शिक्षाओं और चमत्कारों से प्रभावित होकर उस समय के अनेक बड़े राजा दीक्षित हुए। उन्होंने अपना वैभव त्याग कर जनकल्याण में योगदान दिया। इनमें राजा भर्तृहरि, बप्पा रावल, गोगा जी, पूरणमल भगत और मान नाथ शामिल हैं, जो उनके शिष्य बने। आलम यह था कि इस संप्रदाय का विस्तार भारत के लगभग सभी प्रांतों में हुआ, और काबुल, कंधार, सिंध, बलूचिस्तान, कच्छ तथा अन्य देशों तक इसकी प्रसिद्धि पहुंची, जहां लोग इसके अनुयायी बने।

- गोरक्षनाथ जी ने संस्कृत और लोक भाषा में योग संबंधी साहित्य की रचना की। उनके द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या 40 बताई जाती है, जिनका संकलन गोरख वाणी में किया गया है। उन्होंने माना है कि सिद्धियों के पार जाकर शून्य समाधि में स्थित होना ही योगी का परम लक्ष्य होना चाहिए। वे अपनी एक सूक्ति में प्राणीमात्र के बड़े अनुशासन के पक्ष में नज़र आते हैं। वे कहते हैं :

"गोरक्ष कहे सुण हरे अवधू, जग में ऐसै रहणा।
आषै देषिबा कानै सुणिबा मुष थै कछु न कहणा"

नेपाल में राजकीय मुद्रा पर अंकित हैं गुरु गोरक्षनाथ

श्री गोरक्षनाथ का नाम नेपाल देश में वंदनीय है। नेपाल के राजा इनको अपना प्रधान गुरु के रूप में मानते हैं। यहां तक कि नेपाल की राजकीय मुद्रा सिक्के पर श्री गोरक्षनाथ जी का नाम है और वहाँ के एक प्रांत के निवासी गोरखा कहलाते हैं, जिनका नाम भी उन्हीं से पड़ा माना जाता है। भारत के प्राय: सभी प्रांतों में योगी संप्रदाय के आश्रम हैं। उनके नाम पर कई विख्यात स्थान (जैसे गोरखपुर) और महोत्सव मनाए जाते हैं। राजस्थान में गोगा जी का जन्म गोरक्षनाथ के वरदान से हुआ था, जो एक प्रसिद्ध कथा है। संक्षेप में, गोरक्षनाथ ने योग और अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों को सरल बनाकर जन-जन तक पहुंचाया, सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा दिया, और नाथ संप्रदाय को एक संगठित तथा प्रभावशाली परंपरा के रूप में स्थापित किया।

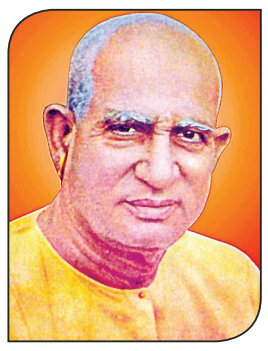

ब्रह्लीन दिग्विजय नाथ।

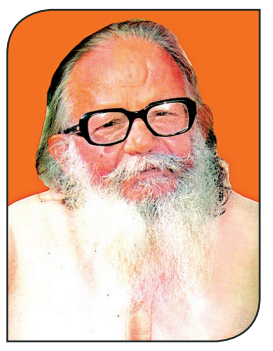

ब्रह्लीन अवैद्यनाथ।

- आचार्य अक्षय कुमार बनर्जी के अनुसार, गोरक्षनाथ मंदिर और मठ के बारे में परंपरागत मान्यता यह है कि वह मंदिर और इसके साथ का मठ ठीक उसी स्थान पर बनाए गए हैं जहां रहकर सिद्ध योगीराज गोरक्षनाथ ने बहुत दिनों तक गहनतम समाधि का अभ्यास किया था। तब के समय में यह स्थान एक घना जंगल हुआ करता था। नाथ संप्रदाय के इस महान प्रतिस्थापक ने इस स्थान को अपने आध्यात्मिक और अतिमानवीय गौरव से पवित्र किया।
- गोरखपुर में आज हम जिस विशाल और भव्य मंदिर का दर्शन कर हर्ष और शांति का अनुभव करते हैं, वह ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी की कृपा से है। इसके बाद उनके उत्तराधिकारी पीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ जी हुए। उन्होंने इस परंपरा को आगे बढ़ाया और इस उत्तराधिकार को वर्तमान पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी के मज़बूत हाथों में सौंपा। अब वे ही इस पीठ के पीठाधीश्वर हैं। उनके संरक्षण में श्री गोरक्षनाथ मंदिर विशाल आकार-प्रकार, प्रांगण की भव्यता तथा पवित्र रमणीयता प्राप्त कर रहा है। पुराना मंदिर प्रांगण नव-निर्माण की विशालता और व्यापकता में समाहित हो गया है। मंदिर के भीतर वेदी की ओर एक निश्चल दीपशिखा है। यह दीपशिखा रात-दिन सतत रूप से मंद-मंद जलती रहती है, और इसे कभी बुझने नहीं दिया जाता। यह परम ज्योति का उपयुक्ततम प्रतीक है, जिसमें शिव और विष्णु परम तत्व के निरपेक्ष और सापेक्ष स्वरूप एक ही रूप में अभिव्यक्त होते हैं। अनेक तीर्थयात्री गोरक्षनाथ की इस तपोभूमि और उनके नाम से प्रसिद्ध पवित्र मंदिर के दर्शन के लिए बारह महीने आते रहते हैं। मंदिर में सांस्कृतिक पूजा लगभग थोड़ी-थोड़ी देर के बाद रात-दिन बराबर होती रहती है। पूरी संस्था एक योगी के प्रबंधन में है, जिन्हें महंत कहते हैं। महंत का स्थान बड़ा ही उच्च और पूज्य माना जाता है।
- गोरक्षनाथ तथा उनकी परंपरा के योगी-सिद्धों ने जहां योग साधना को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया, वहीं उसे आम जन के लिए सुलभ बनाया। उन्होंने परम सत्य को भी अपने आध्यात्मिक अनुभव से सार्वजनिक किया।

गोरक्षनाथ जी "गोरख वाणी" में कहते हैं:

"अजपा जपै सुनि मन धरै, पांचो इंद्री निग्रह करें।
ब्रह्म अगनि में होमै काया, तास महादेव बंदै पाया।"

गुरु परंपरा और "आदेश" का महत्व

- नाथ संप्रदाय में गुरु-शिष्य परंपरा का विशेष महत्व है। "आदेश" शब्द इस संप्रदाय का अभिवादन है, जिसका अर्थ है आत्मा, दिव्य आत्मा और शरीर आत्मा का मेल। यह गुरुओं और समाधि स्थलों के सामने प्रणाम के रूप में उपयोग होता है। इसका प्रयोग शिष्य अपने गुरुओं के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए करते हैं, और गुरु अपने शिष्यों को आशीर्वाद देते समय इसका प्रयोग करते हैं। योगी बालकनाथ जी के अनुसार, गुरु ही वह माध्यम हैं जिसके द्वारा मनुष्य चौरासी लाख योनियों के बंधन से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

नाथ योगी और 'हठ' योग

- हठ योग में 'ह' सूर्य और 'ठ' चंद्रमा का प्रतीक है, जो शरीर में ऊर्जा के संतुलन को दर्शाता है। इसमें ध्यान और प्राणायाम के माध्यम से शरीर की ''इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना'' नाड़ियों को नियंत्रित किया जाता है। गोरक्षनाथ जी ने हट योग के माध्यम से हरिद्वार के ऊपर स्थित झिलमिल गुफा में 65,000 मंत्रों को सिद्ध किया। उन्होंने संस्कृत के कई मंत्रों का हिंदी में अनुवाद भी किया, जिससे ये आम लोगों तक पहुंच सके।

प्रस्तुति: सिद्धार्थ श्रीवास्तव

चिंतन

धर्म की उत्कृष्ट अवस्था ही हैं अध्यात्म

धर्म का अर्थ है धारण करना, वह क्रियाएं,वह सिद्धांत जिनको हम पूर्ण रूप से स्वीकार कर धारण करते हैं अर्थात धारण करने योग्य ही धर्म है अब चाहे वह सिद्धांत हो या क्रिया हो या कोई मनोभाव ही क्यूँ ना हों, हमारे वेदों और पुराणों में यही सिद्धांत, क्रियाये, वर्णित हैं जो सांसारिक जीवन को जीने के लिए, जीवन का निर्वाह करने के लिए आवश्यक हैं

सांसारिक जीवन में धर्म हर रिश्ते, हर मनोभाव,हर जीव के अनुशाशित आचरण को साधता हैं, फिर वो चाहे पिता का, पुत्र का, माता का, मित्र का धर्म ही क्यों ना हों, धर्म सामाजिक व्यवस्था का सुडोल और सूद्रन ढांचा हैं और वह जीवंत रहता हैं आध्यात्मिक चेतना से, सारे सिद्धांत मौलिक रूप से एक ही स्वरूप को दर्शाते हैं जो हैं धर्म वैज्ञानिक पृष्ठभूमि के यह सिद्धांत ही हमारे वेदों, हमारे उपनिषदों, में इंगित हैं इन को धारण कर के ही हम जीवन में कर्तव्यों का निर्वाह करते हैं पर जब धर्म बुद्धि से उतरकर मन और आत्मा तक पहुंच जाता है तब वहीं से आध्यात्मिक चेतना की जागृति होती है और आध्यात्मिक बल मिलना आरंभ होता है, जब हमारी आत्मा धर्म को धारण कर लेती हैं तब ही हमारा आध्यात्मिक स्वरूप जागृत होता हैं यानी धर्म का आत्म केंद्रित होना ही अध्यात्म हैं, धर्म और अध्यात्म बाहरी रूप से दो अलग-अलग बातें नजर आती है पर वास्तविक रूप से "एक शरीर और एक प्राण है धर्म और अध्यात्म" धर्म क्रिया है और अध्यात्म उसे आत्मसार करने की प्रक्रिया है जैसे आदतों से संस्कार बनते हैं वैसे ही धार्मिक आचरण व क्रियो में लिप्त रहना उनको करते रहना ही उन्हें आत्मसार करता हैं धर्म से जुड़ी क्रियो को करते रहना उनका अभ्यास करते रहना ही उनको हमारी आत्मा तक पहुंचा सकता है यानी "रिचुअल से ही स्पिरिचुअल बन सकते हैं "धर्म की उत्कृष्ट अवस्था ही हैं आध्यात्म"

धर्म और अध्यात्म बाहरी रूप से दो अलग-अलग बातें नजर आती है पर वास्तविक रूप से "एक शरीर और एक प्राण है धर्म और अध्यात्म"

प्रस्तुति: ज्योतिषचार्या डॉ.स्वाती सक्सेना

प्रस्तुति: मनोज त्रिपाठी

धर्म-अध्यात्म की एआई यात्रा में आत्मा की खोज

आधुनिक तकनीक और प्राचीन आध्यात्मिक ज्ञान का मिलन अब कल्पना नहीं, हकीकत बन रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) न केवल बिजनेस, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला रही है, बल्कि अध्यात्म की दुनिया में भी प्रवेश कर चुकी है। एआई का इस्तेमाल धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में नई संभावनाएं लेकर आया है। धर्म, पूजा-पाठ, ध्यान और निजी ध्यात्मिक अनुभवों को नए आयाम देने में इसकी भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। एआई की मदद से पवित्र ग्रंथों के साथ बातचीत को नया रूप मिल रहा है। इसका प्रयोग आध्यात्मिक मार्गदर्शन को निजी बनाने के साथ धार्मिक अनुष्ठान भी बढ़ा रहा है। लेकिन इस सबके बावजूद अध्यात्म की दुनिया में एआई से आ रहे बदलावों के बीच यह सवाल कम महत्वपूर्ण नहीं है कि इसे एक नई चेतना की शुरुआत माना जाए या भ्रम का युग। पूरी दुनिया में इस बात को लेकर बहस छिड़ी है कि क्या एआई आत्मा की खोज में सहायक होगा या इस विषय को और भटका देगा।

आज इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि एआई संचालित विश्लेषण ने गीता, बाइबिल, कुरान जैसे पवित्र ग्रंथों के अध्ययन में नई जान फूंक दी है। धर्म और अध्यात्म से जुड़े गूढ़ विषयों पर नए दृष्टिकोण के साथ प्रासंगिक तथा समावेशी समझ प्रदान की है। एआई के माध्यम से धार्मिक ग्रंथों का उन्नत विश्लेषण उन पर आस्था रखने वाले लोगों का भरोसा और बढ़ा रहा है। पारंपरिक प्रथाओं और धार्मिक मान्यताओं को समृद्ध कर रहा है। एआई संचालित ऐप्स आभासी आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में लोगों को प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं। उपयोगकर्ता की भावनाओं और आध्यात्मिक आवश्यकताओं के मुताबिक निजी प्रार्थनाएं और ध्यान संबंधी चिंतन तैयार किए जा रहे हैं।

एआई का धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में बढ़ता इस्तेमाल क्या दुनिया के लिए नई चुनौती पेश कर सकता है?

डिजिटल पूजा और वर्चुअल मंदिर

- एआई के माध्यम से श्रद्धालु वर्चुअल पूजा स्थलों और मंदिरों का अनुभव ले सकते हैं। कई एप्स और वेबसाइट्स एआई आधारित वर्चुअल दर्शन की सुविधा प्रदान करती हैं। इनके जरिए भक्त 3-डी और 360 डिग्री तकनीक का उपयोग करके अपनी इच्छा के मुताबिक मंदिर में मौजूद रहने का अनुभव कर सकते हैं।

बढ़ेंगे डिजिटल गुरु और ज्योतिषी

- अध्यात्म में एआई के प्रवेश से आने वाले समय में डिजिटल गुरुओं की संख्या तेजी से बढ़ सकती है। इसी तरह एआई ज्योतिषी या भविष्यवक्ता आपके कर्म, राशिफल के आधार पर फलित बताने के साथ पूर्व जीवन की एआई आधारित व्याख्या करते नजर आ सकते हैं। जेफरी सेलावी ऐसा ही एक ज्योतिषीय उपकरण है, जो एस्ट्रल मैप्स और राशि चक्र कुंडली की गणना करता है। टैरो मास्टर, टैरो टैप भी कुछ ऐसे ही तकनीकी उपकरण हैं।

आध्यात्मिक चैटबॉट्स कर रहे मार्गदर्शन

- एआई आधारित चैटबॉट्स, जैसे कि धर्मबॉट्स, भक्तों के सवालों का जवाब देकर उन्हें धार्मिक और आध्यात्मिक रास्ता दिखाने का काम कर रहे हैं। यह तकनीक न केवल त्वरित उत्तर देती है, बल्कि लोगों को उनके विषय से संबंधित गहन जानकारी भी प्रदान करती है। गीताजीपीटी के माध्यम से आध्यात्मिकता, दर्शन और संस्कृति का अन्वेषण किया जा सकता है, तो बाइबिल एआई सटीकता के साथ बाइबिल संबंधी अध्ययन उपलब्ध कराता है। बात चैटजीपीटी की करें, तो इससे अब तमाम लोग जीवन का उद्देश्य और आत्मा क्या है, जैसे सवाल पूछते हैं और इनका जवाब भी पाते हैं।

मेट्रो में बैठकर हिमालय में ध्यान

- एआई आधारित ध्यान एप जैसे कि कॉम और हेड स्पेस अपने उपयोगकर्ताओं को निजी स्तर पर ध्यान और योगाभ्यास के सत्र प्रदान करते हैं। इस दौरान तकनीक के जरिए साधक की प्रगति का विश्लेषण कर उन्हें बेहतर सुझाव दिए जाते हैं। इसी तरह एआई आधारित गाइडेड मेडिटेशन, वर्चुअल रियलिटी के साथ जुड़कर कुछ इस तरह के ध्यान का अनुभव दे रहे हैं, जैसा कि आप हिमालय की गोद में बैठकर महसूस करते हैं, भले ही आप मेट्रो में सफर कर रहे हों या सुबह के समय अपनी छत पर बैठे हों।

मंत्रों और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन

धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने, उनका अनुवाद करने के साथ मंत्रों, वचनों या श्लोकों का अर्थ समझाने के लिए दुनिया भर में अब एआई का धड़ल्ले से उपयोग किया जा रहा है। यह सुविधा उन लोगों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है जो संस्कृत, अरबी या अन्य प्राचीन भाषाएं नहीं जानते हैं। इसी क्रम में कई एआई आधारित ऐप लोगों को मंत्रोच्चारण और जीवन दर्शन सिखाने के काम में लगे हैं। उदाहरण के लिए सिबिल एआई जैसे नेटवर्क के जरिए आध्यात्मिक अंतृदष्टि और मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है।